आदि शंकराचार्य

drishtiias.com/hindi/printpdf/adi-shankaracharya

हाल ही में प्रधानमंत्री ने केदारनाथ (उत्तराखंड) में आदि शंकराचार्य की 12 फुट की प्रतिमा का अनावरण किया।

प्रमुख बिंदु

परिचय

- आदि शंकराचार्य का जन्म 11 मई, 788 ईस्वी को कोच्चि, केरल के पास कलाडी नामक स्थान पर हुआ था।
  33 वर्ष की आयु में उन्होंने केदार तीर्थ में समाधि ली।
- वे **शिव के भक्त** थे।
- उन्होंने **अद्वैतवाद के सिद्धांत** को प्रतिपादित किया और संस्कृत में वैदिक सिद्धांत (उपनिषद, ब्रह्म सूत्र और भगवद गीता) पर कई टिप्पणियाँ लिखीं।
- वे **बौद्ध दार्शनिकों** के विरोधी थे।

- **प्रमुख कार्य**
  - ब्रह्मसूत्रभाष्य (ब्रह्म सूत्र पर टिप्पणी)।
  - भजगोविंदा स्तोत्र।
  - निर्वाण शातकम्।
  - प्राकरण ग्रंथ।

- **अन्य योगदान:**
    - वह भारत में उस समय हिंदू धर्म को पुनर्जीवित करने के लिये काफी हद तक ज़िम्मेदार थे जब बौद्ध धर्म लोकप्रियता प्राप्त कर रहा था।
    - सनातन धर्म के प्रचार के लिये उन्होंने शिंगेरी, पुरी, द्वारका और बद्रीनाथ में भारत के चारों कोनों पर चार मठों की स्थापना की।
- **अद्वैत वेदांत:**
    - यह कट्टरपंथी अद्वैतवाद की दार्शनिक स्थिति को व्यक्त करता है, यह संशोधनवादी विश्वदृष्टि प्राचीन उपनिषद ग्रंथों से प्राप्त हुई है।
    - अद्वैत वेदांतियों के अनुसार, उपनिषद अद्वैत के एक मौलिक सिद्धांत को 'ब्राह्मण' कहते हैं, जो सभी चीजों की वास्तविकता है।
    - अद्वैत ब्रह्म को पारलौकिक व्यक्तित्व और अनुभवजन्य बहुलता के रूप में मानते हैं। अद्वैत वेदांती यह स्थापित करना चाहते हैं कि स्वयं (आत्मा) का आवश्यक मूल ब्रह्म है।
    - अद्वैत वेदांत इस बात पर ज़ोर देता है कि आत्मा शुद्ध अनैच्छिक चेतना अवस्था में होती है।
    - अद्वैत एक क्षणरहित और अनंत अस्तित्ववादी है और संख्यात्मक रूप से ब्रह्म के समान है।